

# बाल विकास

जानिए—

बच्चों में आदर्श चरित्र निर्माण कैसे करें?



**बाल विकास**

**जानिए— बच्चों में आदर्श  
चरित्र निर्माण कैसे करें?**

**BAL VIKAS**

**JANIYE—BACHCHO MAIN ADARSH  
CHARITRAMAIN KAISE KAREN ?**

## बच्चों में आदर्श चरित्र निर्माण

बच्चों की स्थिति आज जैसी है, उसमें थोड़ा-बहुत हाथ भले ही संस्कारों का हो, लेकिन अधिकांशतः उसके चरित्र पर माता-पिता, परिवार और समाज द्वारा डाला गया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव प्रमुख होता है। बच्चा हमेशा वही सीखता है, जो उसके घर या परिवार अथवा उसके आस-पड़ोस में घटित होता है। परिवार बच्चे का प्रथम सामाजिक वातावरण होता है। परिवार शांतिप्रिय और सभी को उचित सम्मान देने वाला होना चाहिए। केवल परिवार ही अनुकूल वातावरण पैदा करके बच्चे को यथार्थ रूप में शिक्षित कर सकता है।



परिवार को चाहिए कि बच्चों की देखभाल करें, प्यार करें, पर अति न करें। उसे मेहनत व कार्य स्वयं करने दें। वह कोई भी कार्य करना चाहता है तो उसे तरीका बतायें कि कैसे करें ? इससे बच्चे का ज्ञान भी बढ़ेगा और स्वयं कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। बच्चे हर चीज देखकर और सुनकर सीखते हैं। उन्हें बड़ों से हर वक्त दूसरों की चीज़ बिना इजाजत के न उठाने, हमेशा सच बोलने, बड़ों का आदर करना के उपदेश हर समय मिलते रहते हैं। आवश्यक है कि माता-पिता बच्चों के सामने झूठ न बोलें। साथ ही बच्चे शुरू-शुरू में छोटी-छोटी बातों को लेकर झूठ बोलने का प्रयास करें तो उसे मजाक में न लें। बच्चे के इस छोटे के प्रति आगाह करायें और प्यार से समझने का प्रयत्न करें। कई बार बच्चों को गलती से रोकते समय माँ-बाप चिड़ जाते हैं और उन्हें डाँटने या पीटने लगते हैं। लेकिन अगर देखा जाए तो यह समस्या का वास्तविक हल नहीं है। इन सभी बुरी आदतों को सुधारने के लिए हमें बहुत छोटे से बच्चे को ही प्रशिक्षित करना चाहिए। प्रायः माता-पिता सोचते हैं कि अभी बच्चा बहुत छोटा है, अभी से उसे क्या सिखाएँ? लेकिन ऐसी बातें करके हम बच्चे के मन में यही गलत संदेश पहुँचाते हैं कि वह जो भी कर रहा है, सही कर रहा है। हमें ऐसी गलती से बचना चाहिए।

परिवार के सदस्यों को चाहिए कि समय-समय पर बच्चों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करते रहें। बच्चों को व्यवहार कुशल बनाने के लिए उनमें



उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना बहुत ज़रूरी है। प्रत्येक बालक में जन्म से ही प्रतिभा होती है। बच्चों की उस स्थिति को देखते हुए ही उसे आगे बढ़ाना चाहिए। बच्चों की इच्छाओं को दबाने का प्रयास कदापि नहीं करना चाहिए।

## बच्चों के चरित्र निर्माण में स्कूल की भूमिका—

शिक्षकों के कार्य की महानता का वर्णन हिन्दू आदि ग्रंथों में इस प्रकार है —

**गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्  
परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥**

अर्थात् — गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु हि शंकर है; गुरु  
हि साक्षात् परब्रह्म है; उन सद्गुरु को प्रणाम।

बच्चों की आयु जैसे-जैसे महीनों और वर्षों में बढ़ती जाती है, उनका विकास शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से होता है, उनमें समझने और सीखने की क्षमता का विकास होने लगता है। 5 सितंबर को बच्चे शिक्षक दिवस मनाते हैं। सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का योगदान शिक्षा जगत में सराहनीय योगदान रहा था। आदर्श व उच्च शिक्षा के द्वारा बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को निखारने में स्कूल व शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा द्वारा बच्चों को ज्ञान व संस्कार दोनों ही मिलते हैं।



आज के व्यस्त समय में जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे माता-पिता का उनके साथ वक्त बिताना कम होता जाता है। बढ़ते बच्चों में धीरे-धीरे नई चीजों को जानने और समझने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है और वे ज्यादा-से-ज्यादा सीखना चाहते। बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं सामाजिक चेतना के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संज्ञानात्मक विकास और शिक्षा किसी भी बच्चे के भविष्य के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

## शिक्षक का बच्चों के विकास में कुछ महत्वपूर्ण भूमिका, जो इस प्रकार हैं—

- बच्चों को अन्य लोगों से बातचीत करने की कला व संस्कार की क्षमता का विकास करना।
- बच्चों के भीतर आत्मविश्वास भरना, किसी भी कार्य के प्रति सकारात्मक भाव विकसित करना।
- बच्चों में सही काम करने के लिए जोश व शक्ति प्रदान करना।
- प्रत्येक बच्चे को उसकी योग्यता के अनुरूप शिक्षा की जरूरत होती है, क्योंकि हर बच्चा शिक्षा में अच्छा नहीं होता, ऐसे कमजोर बच्चों को सकारात्मक, भावनात्मक मदद की अत्यंत आवश्यकता है।

## अभिभावक व शिक्षकों में तालमेल

अगर आप भी किसी बच्चे के अभिभावक हैं तो आपको नियमित अंतराल पर स्कूल जाना चाहिए। ताकि बच्चे के बारे में आपको शिक्षक से वास्तविक प्रतिक्रिया (फीडबैक) मिल सकें। बच्चों को भी एक संदेश पहुँचे कि मम्मी-पापा उनकी परवाह करते हैं। इसके लिए स्कूल में आयोजित होने वाली अभिभावक-शिक्षक बैठक में अपनी सक्रिय भागीदारी जरूर सुनिश्चित करें, ऐसा करने से आपको शिक्षकों के नज़रिये से अपने बच्चे की सफलताओं, प्रगति के साथ-साथ चुनौतियों, यानी सहयोग के क्षेत्रों की सटीक पहचान हो सकेगी, साथ ही अपने बच्चे की परेशानियों को शिक्षकों से साझा करें, जिससे आपको अपने बच्चे की ग्रेड, शैक्षिक प्रगति, आपके बच्चे को किस विषय में और ज्यादा सहायता एवं मेहनत करने की जरूरत है या अन्य निजी समस्याओं की पहचान हो सके और उन सभी समस्याओं का निवारण हो सके।

## अभिभावक बच्चों का व्यक्तित्व विकास कैसे बढ़ायें?

बच्चों को बड़ों का आदर करना चाहिए, उन्हें यह बात बड़ों द्वारा ही सिखाई जाए। अतिथियों के आने पर 'प्रणाम' आदि शब्द सिखाएँ, ताकि आने वालों को भी खुशी हो और वे बच्चों की तारीफ़ करें, जिससे उनका उत्साह बढ़ेगा। बच्चों को पारिवारिक अनुशासन में रखें। उनकी हर ज़िद को पूरा न करें। उन्हें प्यार से समझाएँ। परिवार को बच्चे की प्रथम पाठशाला माना गया है। अतः इन सब बातों को देखते हुए परिवार का यह कर्तव्य है कि वे बच्चों को ऐसी शिक्षा, उनके प्रति ऐसा व्यवहार करें कि उनका भविष्य सफल और सुखद बन सके। बच्चों से व्यक्तित्व विकास को बढ़ने के लिए कुछ जरूरी बातें हैं, जो इस प्रकार हैं।





## 1. प्रेम को हावी न होने दें

पालन-पोषण करने के लिए प्रेम काफी है, लेकिन इसके साथ-साथ कुछ और बातें भी हैं, जो जरूरी हैं जैसे अनुशासन का होना, परिवारक माहौल का होना, अनुशासन प्रेम पैदा करता है, लेकिन अगर प्रेम ज्यादा होता है तो यह अति पर पहुँच जाता है।



उदाहरण के तौर पर यदि आप अपने बच्चे को डाँटते हैं या गुस्सा करते हैं या जैसे वह करता है या चाहता है उसकी सारी बातें नहीं मानते हैं। यह आप ऐसा इसलिए करने हैं, ताकि जब बच्चा बड़ा हो तो उसके अंदर कोई बुरी आदत न आये, लेकिन बहुत परिस्थितियाँ इसमें अलग होती है। जैसे बच्चा अपनी बात नहीं मानता है और आप उसे मरने-पीटने लग जाते हैं; लेकिन जब आप बच्चे के साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं तो बच्चे के अंदर आपके प्रति विरोध की भावना पैदा होने लगती है। और इसी कारण जो बात आप मना करते हैं, करने के लिए वह उसी कार्य को करता है, ताकि आप परेशान हो; लेकिन इसके साथ-साथ वह खुद परेशान होता है और आपको भी परेशान करता है और वह इस का आदि हो जाता है। इस स्थिति में आप को उसे धैर्य से समझने की जरूरत होती है, क्योंकि आप बड़े हैं और आपको ज्यादा अनुभव है।

## 2. आसप-पड़ोस में मधुर संबंध बनाए रखें!

घर के साथ-साथ आपका अपने आस-पड़ोस का माहौल भी प्रेमपूर्ण होना चाहिए, क्योंकि इसका प्रभाव भी बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है आपके आस-पड़ोस का माहौल इस तरह का न हो जैसे की एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या, झगड़ें, अपशब्द इत्यादि, क्योंकि बच्चे ये सब चीजें देखता है और उन्हीं बातों को सीख जाता है; सभी के माता-पिता यही चाहते हैं कि उनका बच्चा उनसे एक कदम हमेशा आगे रहे; यही माता-पिता का लक्ष्य होता है, अपने बच्चे के प्रति लेकिन ये सब तभी हो सकता है; जब वह उस माहौल को बदलेगा। क्योंकि समाज (सोसाइटी) का प्रभाव हमारे जीवन पर बहुत ज्यादा पड़ता है,

इसलिए यह कहा जाता है कि जैसे माहौल में आप रहेंगे वैसा ही असर आपको अपनी जिंदगी पर नजर आयेगा अगर आप अच्छे माहौल में रहेंगे तो अच्छी बातों को सीखेंगे और आगे अपने जीवन में उन्हें लागू करेंगे; और गलत माहौल में रहेंगे तो आप गलत बातों को सीखेंगे और अपने लक्ष्य से हट जायेगे और गलत राह पर चल पड़ेगे।



### 3. अपनी इच्छायों को न थोपें

माता-पिता अपने बच्चों पर हमेशा अपनी इच्छायों को थोपते हैं; ऐसा न करें, कभी-कभी बच्चों पर अपनी इच्छायों को न थोपें। जो वह चाहता है, या जिसमें बच्चे की रुचि है उसमें उन्हें प्रोत्साहित करें या उनका सहयोग करें, ज्यादातर माता-पिता यह सोचते हैं या उनका यह सपना होता है कि जो चीजों वह नहीं कर सका, वह चाहता है कि वह उसका बच्चा करे, इस तरह वह अपनी इच्छायों को अपने बच्चों पर थोपने की कोशिश करते हैं। लेकिन इसका परिणाम बाद में क्या होता है, न तो वह पूरी तरह से उसमें रुचि ले पाते हैं, क्योंकि उनका पूरा ध्यान तो उसमें होता ही नहीं है। अंतिम समय में जब बच्चे का परिणाम आता है, तब या तो वह फ़ैल होता है या उसके मार्क्स अच्छे नहीं आते। इस तरह की परेशानियों का सामना उन्हें करना पड़ता है, ऐसी परिस्थिति में बच्चों के व्यक्तित्व विकास में रुकावट आती है, जिसके कारण वह न तो संगीतकार बन पाता है, न ही डॉक्टर। माता-पिता को कभी भी अपने बच्चे के साथ ऐसा नहीं करना चाहिए, अपनी इच्छायें उस पर न थोपें। जो वो करना चाहता है या बनना चाहता है, उसमें उसे प्रोत्साहित करें, उनका साथ दें! इससे बच्चा भी खुश और उसके साथ-साथ माता-पिता भी खुश रहेंगे।



## 4. कठिनाइयों का सामना स्वयं करना चाहिए

अगर बच्चे के सामने किसी तरह की कठिनाई आती है तो उसमें आप उसकी सहायता न करें, बल्कि उसे उसका सामना स्वयं करने दें। उसे बढ़ावा देते रहें, उसे बिल्कुल निराश न करें, अगर वह खुद परेशानियों से लड़ेगा, तभी तो आगे चलकर मजबूत बनेगा और अपनी समस्याओं का खुद ही सामना करेगा, अगर आप हर समय उसकी मदद करोगे या उसकी सहायता करोगे तो वह आगे चलकर भी आप पर ही निर्भर रह जाएगा और खुद कुछ नहीं कर पाएगा, और अगर आगे चलकर उसके जीवन में अगर कोई बड़ी समस्या आयेगी तो वह बहुत जल्दी निराश या हतोत्साहित हो जायेगा और वह सोचेगा कि कोई आये और आकर उसकी सहायता करें, वह हमेशा इसी का आदि हो जायेगा। इसलिए बच्चों के व्यक्तित्व विकास की राह पर उन्हें आपको प्रोत्साहित करना चाहिए, न ही उनकी आपको लॉठी बननी चाहिए।



## 5. स्वयं में बदलाव लायें

अगर आप अपने बच्चे को सही माहौल देना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे पहले स्वयं को बदलना पड़ेगा, आपको हमेशा खुश दिखना चाहिए। सबसे पहली बात यह है, घर में किसी भी तरह की टेंशन न हो, लड़ाई-झगड़ा न हो, यह सब बच्चे के सामने न हो, उसका प्रभाव उस पर पड़ता है। अपने आप को बच्चे की तरह ही ट्रीट करें, उसकी छोटी-छोटी खुशियों में शामिल हों, उसके साथ ज्यादा-से-ज्यादा समय बिताएँ, ताकि वह अपने आप अकेलापन महसूस न करे। और खुद भी खुश रहें और उसे भी खुश रखें।



## 6. बच्चों का गुस्सा किस प्रकार कम करें

अक्सर बच्चे अपनी भावनाओं को गुस्से के रूप में प्रकट करते हैं, लेकिन बार-बार यह गुस्सा करना एक बड़ी समस्या बन जाती है। आइये ये जानें कि किस प्रकार आप अपने बच्चे के गुस्से को कम करें, जो इस प्रकार हैं—





आजकल के बच्चे स्कूल और ट्यूशन दोनों ही एक साथ करते हैं। उस पर पढ़ाई का भार (प्रेसर) काफी होता है, इस वजह से भी बच्चे गुस्सा करते हैं, नींद कम लेते हैं। उनके खाने-पीने का कोई निश्चित समय नहीं होता है, जिसके कारण बच्चों गुस्सा करते हैं और खुद-ब-खुद उसमें चिड़चिड़ापन आ जाता है।

## क्या करें?

जो बच्चे डायबिटीज और मिर्गी के शिकार होते हैं, वे अत्यधिक गुस्सा करते हैं; क्योंकि वे डिप्रेशन के शिकार भी होते हैं। इसके अलावा अगर बच्चे के उसके परीक्षा में मार्क्स कम आये या फिर किसी कारण से वह फेल हो जायें तो भी वह अपना गुस्सा प्रकट करता है या बार-बार उसे स्कूल में फेल-फेल करके पुकारा जाये या कक्षा में सबके सामने अपने अध्यापक द्वारा उसे डाँटा जाये, इन सभी बातों को बच्चा अपने गुस्से के रूप में प्रकट करता है और वह चिड़चिड़ा भी हो जाता है। इसके और भी कई कारण हैं, जैसे—हर छोटी बात पर क्रोधित होना, उसके व्यवहार में बदलाव आना, खाना सही तरह से न खाना, अचानक उसका वजन कम होना, किसी से भी बात न करना, अकेला रहने लगना इत्यादि इस तरह की चीजों में डॉक्टर से जरूर सलाह लेनी चाहिए।

## कुछ बातें जो बच्चों के गुस्से को नियंत्रण में रखती हैं।

- (1) बच्चों को माता-पिता की बातों को सुनना चाहिए, क्योंकि जो बच्चे अपने माता-पिता की बातों को सुनने व समझते हैं, वह इन लक्षणों को अपने अंदर आने नहीं देते हैं और वह बच्चे गुस्सा भी कम करते हैं। अभिभावकों को अपने बच्चों को कोई बात चिलाकर।
- (2) यह भी कहा जाता है कि व्यायाम करने से भी आप अपने गुस्से को काबू में ला सकते हैं।
- (3) गुस्से का एक कारण यह भी है, जिन बच्चों की नींद पूरी नहीं होती है, वे गुस्सा करते हैं अन्यथा जिन बच्चों की नींद पूरी होती है, वे गुस्सा कम होते हैं, और खेल-कूद में भाग लेने वाले बच्चे फुर्तीले होते हैं और शांत भी, इसलिए उन्हें गुस्सा नहीं आता है।



(4) गुस्सा जताने का कारण कई बार माता-पिता भी होते हैं, क्योंकि वे अपने बच्चे की हर बात मान लेते हैं। उसे पूरी कर देते हैं, जिसका प्रभाव बाद में नजर आता है। क्योंकि बच्चे इस बात के आदि हो जाते हैं कि उनकी हर बात उनके माता-पिता पूरी कर देंगे। वे धैर्य बिल्कुल नहीं रखते और बार-बार गुस्सा के रूप में आपके सामने उसे व्यक्त करते हैं। इस परिस्थिति में बच्चे को समझायें प्यार से, डाँट कर नहीं।

## बच्चों में किस प्रकार अच्छी आदतों को लायें?

आप सभी यह जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज में रहने के लिए अपने अंदर उन सभी आदतों व गुणों को लाना आवश्यक है। यह गुण हमारे अंदर पहले से ही होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे हम एक बच्चे से थोड़ा सा बड़े होते हैं तो ये सब बातें हमारे माता-पिता हमें सिखाते हैं। हमारे माता-पिता ही हमारे पहले गुरु होते हैं। ये हमारे अंदर उन सभी बातों को जागरूक करते हैं, ताकि हम एक अच्छे इन्सान बनें और यही आदतें हमें एक अच्छा इन्सान बनाने में बहुत मदद करती है। जैसे अपने से बड़ों का आदर करना, अच्छी-अच्छी बातें सीखना और दूसरों को भी सिखाना इत्यादि।



कुछ अच्छी आदतें जो इस प्रकार हैं, जो आपके बच्चे में जरूर होनी चाहिए, अगर यह आदतें उनमें नहीं है तो हर माता-पिता को अपने बच्चे को यह जरूर सिखाना चाहिए जैसे —

### (1) बच्चे को सफाई से रहना सीखायें।

यदि आपका बच्चा छोटा है या बड़ा सबसे पहले बच्चे में सफाई की आदत डालें, जैसे दाँत साफ करना, अपने जूतों की सफाई, अपने नाखून की सफाई, अपने किताबों को सही जगह पर रखना, उन्हें गंदा न करना, खाना खाने से पहले

या बाद में अपने हाथों की सफाई करना इत्यादि यह सब आदतें बच्चों को जरूर सिखायें।



## (2) अपने से बड़े व छोटे का आदर।

बच्चे को अपने से बड़े व छोटे दोनों का आदर करना सिखायें। जैसे अपने से छोटे से भी 'आप' करके बात करें। 'तू' का प्रयोग न करें, क्योंकि इस शब्द का प्रयोग से ज्यादा लोग बुरा मानते हैं। अगर आप उन्हें 'तुम' करके बात करेंगे। आप स्वयं भी बच्चे से 'आप' करके बात करें, क्योंकि बच्चे अपने बड़ों से ही सीखते हैं जैसा आप करोगे, वैसा ही वो भी करते हैं और सीखते हैं। और बाद में इन सभी बातों को अप्लाई करते हैं।



## (3) समय का महत्व भी सिखायें।

बच्चों को समय का महत्व जरूर पता होना चाहिए, अगर अभी से उनमें ये आदतें होंगी तो आगे चलकर भी वह समय का पालन करेंगे, जैसे किस समय बच्चे को स्कूल जाना, सोना, खाना-पीना, टी.वी. देखना इत्यादि। इन सभी का एक निर्धारित समय रखें कि किस समय पर उसे कौन-कौन से कार्य करने हैं। समय का प्रयोग करना सिखायें, ताकि आपका बच्चा आगे बड़ा होकर एक अच्छा इंसान व समय का पाबंद हो।





## (4) चीजों को शेयर करना सीखें।

आपको अपने बच्चे में इस तरह की आदत डालनी है कि वह अपने खिलौनों, किताबें, खाने-पीने की चीजों को एक-दूसरे के साथ शेयर करें। इस आदत को बच्चे में जरूर रखें। यह आगे के जीवन में उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा।

## (5) ईमानदार व अच्छा इन्सान बनें।

आप अपने बच्चे के अंदर ईमानदारी की आदत जरूर डालें। अगर आपके बच्चे के अंदर ईमानदारी की आदत है या वह ईमानदार है तो वह झूठ का सहारा कभी भी नहीं लेगा, न ही ऐसा कोई कार्य करेगा, जिससे आपकी किसी प्रकार की कोई हावी हो, न हो। कभी किसी को धोखा देगा, और अपने कार्य के प्रति ईमानदार होगा और ईमानदारी के साथ अपने कार्य को संपूर्ण करेगा।

## (6) जल्दी सोना व उठना

अपने बच्चे के अंदर जल्दी सोने व उठने की आदत जरूर डालें। रात को जल्दी सो जाये और सुबह जल्दी उठे, यह आदत बच्चे के अंदर अवश्य होनी चाहिए।

## (7) अच्छी बातों को सिखाना।

बच्चों को अच्छी बातें सिखायें जैसे सही और गलत में अंतर बच्चों को समझ नहीं होता कि क्या उनके लिये सही है और क्या गलत है। इसलिए समय-समय पर अच्छी बातों और गलत सिखाते रहें। अगर बच्चा सही-गलत में अंतर करना सीख जायेगा और स्वीकार लेगा तो वह अपना निर्णय स्वयं ले सकेगा। क्या उसके लिये गलत और क्या उसके लिये सही है।

## (8) अपने से बड़ों की इज्जत करना।

अपने बच्चे को यह सिखायें कि अपने से बड़ों की इज्जत करें, उनकी आज्ञा का पालन करें, जो वो कहते हैं उसे मानें। उनके कामों में उनकी मदद अवश्य करें। यह सभी आदतें अपने बच्चों के अंदर जरूर लायें और उन सिखायें अपने बुजुर्गों की बात मानें। आप स्वयं भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, क्योंकि बच्चा आपसे ही सिखेगा। जेसा आप करेंगे, वैसा ही करेगा।

**एक आदर्श व सभ्य समाज के लिए उच्च, संस्कारी स्वस्थ व सकारात्मक व्यक्तित्व की अयस्कता होती है। एक देश का भविष्य उस के नयी पीढ़ी पर निर्भर होता जो साहस के साथ देश, समाज व घर (जहाँ वह रहता है) उन सभी के विकाश में महत्वपूर्ण भूमिका**

निभाता है। इसलिए प्रत्येक बच्चा अपने घर के भविष्य के साथ-साथ देश भी भविष्य है और आदर्श व विकसित भविष्य के लिए बच्चों में संस्कारों के साथ-साथ आदर्श चरित्र-निर्माण होना अयस्क है।

